KEEP THE TORCH OF DHAMMA A LIGHT

LET IT SHINE BRIGHTLY IN YOUR DAILY LIFE.

विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2567, माघ पूर्णिमा, 24 फरवरी, 2024, वर्ष 53, अंक 9

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

असेवना च बालानं, पण्डितानञ्च सेवना।
पूजा च पूजनीयानं, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥2॥

– सुत्तनिपातपाळि गाथा 262, मङ्गलसुत्तं

मूर्खों की संगति न करना, पंडितों (ज्ञानियों) की संगति करना और पूजनीयों की पूजा करना – यह उत्तम मंगल है।

ऐसे थे गुरुदेव : सयाजी ऊ बा खिन

कमल से कोमल : कुलिश कठोर

मैत्री और करुणा से ओत-प्रोत रहने वाले संत पुरुष का हृदय कमल की पंखुड़ी सदृश कोमल होता है। परंतु कर्तव्यपरायणता के क्षेत्र में जहां आवश्यक हो, वहां कुलिश, यानी, बज्र के सदृश कठोर बन जाता है। सयाजी के जीवन में ये दोनों गुण बार-बार प्रकट होते रहते थे। अनेक प्रसंग हैं, जिनमें दो-चार का उल्लेख करना पर्याप्त होगा।

4 जनवरी, 1942 को ब्रह्मदेश आजाद हुआ। परंतु आजाद सरकार को प्रारंभ से ही अनेक बहुरंगी बागियों से मुठभेड़ लेनी पड़ी। भिन्न-भिन्न मत-मतांतरों वाले बागियों के समूह के समूह देश के भिन्न-भिन्न भागों में सरकार के विरुद्ध उठ खड़े हुए। उनके पास हथियारों की कमी नहीं थी। द्वितीय महायुद्ध के समय जापानियों ने और उन्हीं की तरह मित्र राष्ट्रों ने भी युद्ध में बरमी युवकों को अपनी ओर खींचने के लिए खुले हाथों हथियार बांटे थे। अब देश में सुव्यवस्थित शासन लागू करने में यही बाधक सिद्ध हुए। बागियों के इतने मोर्चे खुले कि नवनिर्मित सरकारी सेना के लिये उनका सामना करना कठिन हो गया। धीरे-धीरे चारों ओर बागियों का दबदबा छा गया। सब जगह उन्हीं का बोल-बाला। समाजवाद, साम्यवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद के नारे लगाने वाले भिन्न-भिन्न बागी भिन्न-भिन्न स्थानों को अपने-अपने कब्जे में किये बैठे थे। एक समय ऐसा आया कि म्यंमा की संघीय सरकार केवल रंगून नगर की सरकार बन कर रह गई। बागियों का एक दल रंगून का भी दरवाजा खटखटाने लगा। शहर से 10-12 मील दूर तक उनका आधिपत्य हो गया। संघीय सरकार का अस्तित्व खतरे में पड़ गया। सारे देश में अराजकता फैली हुई थी। रंगून की सरकार भी गिर जाय तो देश की संघीय सत्ता उखड़ जाय। सारा देश टुकड़े-टुकड़े में बँट जाय। सरकार चिन्तित, सेना चिन्तित, पर करे क्या? बचाव की कोई आशा नहीं दीख रही थी।

पूज्य गुरुदेव देश में सुख-शांति और समृद्धि चाहते थे। पर वे भी क्या करते? उनका बल तो धर्म-बल ही था। कभी प्रधानमंत्री के घर जाकर मंगल मैत्री देते। कभी अपने निवास स्थान से ही देश की सुरक्षा की मंगल कामना करते।

एक ओर उनके हृदय में कमल की-सी कोमलता तथा दूसरी ओर एक घटना को लेकर हृदय वज्रवत कठोर हो गया। हुआ यों कि इस आपातकाल में सरकार ने अपने पड़ोसी देश से मदद मांगी। पड़ोसी देश मित्र था। संकट में साथ देने को राजी हुआ। पर जो सामग्री उसने देनी स्वीकारी, वह हवाई जहाजों द्वारा ही लाई जा सकती थी। सरकार के पास उपयुक्त विमान-सेवा का साधन नहीं था। यह भी बाहर से ही उपलब्ध करवाना था। इस योजना को सफलीभूत करने के लिए सरकार ने जो फैसला जल्दबाजी में किया, वह देश के कानून के चौखटे में फिट नहीं बैठता था।

सयाजी ऊ बा खिन एकाउन्टेन्ट जनरल थे। उन्होंने इस निर्णय को अवैध करार दिया। सरकार असमंजस में पड़ी। प्रधानमंत्री जानता था कि सयाजी सिद्धांतों के धनी हैं। इस मामले में समझौता करने वाले नहीं हैं। वे हमेशा दृढ़तापूर्वक यही कहा करते थे कि मुझे वेतन इसी बात की मिलती है कि मैं राज्य-कोष का एक पैसा भी नियम विरुद्ध खर्च न होने दूं।

प्रधानमंत्री के मन में सयाजी की इस कर्तव्यनिष्ठा के प्रति बेहद सम्मान था, परंतु स्थिति बड़ी नाजुक थी। अत: सयाजी को सलाह-मशविरा के लिए बुलाया गया और उनसे निवेदन किया गया कि आवश्यक सामग्री तो लानी ही होगी। इस पर खर्च किया जाना आवश्यक है। अब आप ही बताइये कि इसे कैसे नियमों के चौखटे में फिट किया जाय? सयाजी ने रास्ता बताया और उसे अपनाकर सरकार सही उद्देश्य को गलत तरीके से पूरा करने के दोष से बची।

ऐसा ही एक अन्य प्रसंग –

धीरे-धीरे राष्ट्रीय सेना ने बागियों का खात्मा किया। केवल सुदूरवर्ती पहाड़ी प्रदेशों को छोड़कर लगभग सारे देश के बागी कुचल दिये गए। अब सरकार समाज-कल्याण की विभिन्न योजनाओं में अधिक ध्यान देने लगी। भिक्षु-संघ की कृपा से देश में साक्षरता की समस्या नहीं थी। थोड़े-से गिरिजनों को छोड़कर बाकी सारा देश साक्षर था। पर ऊंची शिक्षा का अभाव था। इसे पूरा करने के शुभ उद्देश्य से प्रधानमंत्री ने एक बृहद् सार्वजनीन सभा में गांव-गांव में वयस्क-शिक्षा आरंभ करने की घोषणा की और साथ ही इस कार्य के लिये संबंधित मंत्रालय को तत्काल एक मोटी रकम देने का ऐलान किया।

इस योजना के प्रति सयाजी की पूरी सहानुभूति थी। यह मोटी रकम बजट के किसी सेक्शन में भी फिट नहीं बैठती थी। अत: उन्होंने विरोध

किया। प्रधानमंत्री की स्थिति बड़ी नाजुक हुई, परंतु ऊ बा खिन का विरोध नियमानुकूल था। अत: उसे स्वीकारा। लेकिन जो घोषणा की जा चुकी थी, उसे तो पूरा करना ही था। अत: प्रधानमंत्री ने एक और रास्ता ढूंढ़ निकाला। रंगून रेस-कोर्स क्लब के प्रमुख अधिकारियों को बुलवाया और इस योजना को सफलीभूत करने के लिये उनका सहयोग मांगा। एक दिन स्पेशल घुड़दौड़ का आयोजन किया जाय, जिसकी प्रवेश-फीस ऊंची रखी जाय। उससे जो मोटी आमदनी हो, वह इस शुभ कार्य के लिये दान में दी जाय। प्रधानमंत्री की बात भला कौन टालता। ऐसा ही हुआ। रेस-क्लब को उस दिन मोटी आमदनी हुई। एक विशाल सार्वजनीन सभा में उस रकम का चेक रेस-क्लब वालों ने प्रधानमंत्री को और प्रधानमंत्री ने संबंधित मंत्री को बड़ी धूमधाम से भेंट किया।

आयोजन के बाद जब केस सयाजी के पास आया तो उन्होंने फिर रोक लगाई। प्रधानमंत्री हैरान था। उसकी प्रतिष्ठा का सवाल था। ऊ बा खिन अब क्यों चेक का भुगतान रोक रहा है? यह तो सरकारी पैसा नहीं है। इसे रोकने का क्या अधिकार है उसे? पर ऊ बा खिन ने नोट लिख कर चढ़ाया कि रेस-कोर्स की आय में से सरकारी टैक्स की रकम काट कर जो बचे, उसका भुगतान किया जा सकता है। प्रधानमंत्री लाजबाब था। उसने मुस्करा कर स्वीकार किया और ऐसा ही हुआ।

प्रधानमंत्री ही नहीं, किसी भी कैबिनेट मिनिस्टर के निर्णय के खिलाफ निर्भयतापूर्वक आवाज उठाना ऊ बा खिन जैसे बिरले आफिसर के ही बूते की बात थी।

ऊ बा खिन शासन-सेवा की जिम्मेदारी निभाने में जितने निर्भीक थे, उतने ही निष्पक्ष भी। इस प्रसंग में भी अनेक घटनाएं हैं।

उनके दफ्तर में एक कनिष्ठ अधिकारी था, जो कि उनका प्रिय शिष्य भी था। वह बहुत विनम्र और सेवाभावी व्यक्ति था। गुरुजी की सेवा में सदा तत्पर रहने वाला। गुरुजी को भी उसके प्रति बहुत वात्सल्यभाव था। परंतु यह वात्सल्यभाव कर्तव्यपरायणता में बन्धन न बन सका। हुआ यूं कि साल के अंत में अधिकारियों के प्रोमोशन का समय आया। प्रोमोशन की लिस्ट में इस व्यक्ति का नाम सबसे ऊपर था क्योंकि सेवा-वर्षों की गणना में वह औरों से वरिष्ठ था और इस कारण प्रोमोशन का सही हकदार था। गुरुदेव चाहते तो उसके प्रोमोशन की सिफारिश आसानी से कर सकते थे। पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। प्रोमोशन के लिए केवल वरिष्ठता ही नहीं देखी जाय, योग्यता और कार्यदक्षता भी देखी जाय, जिसकी उसमें कमी थी। गुरुजी ने उसे बुलाकर प्यार से समझाया कि वह लेखा संबंधी अमुक परीक्षा पास कर ले तो प्रोमोशन मिल जायगा। शिष्य ने गुरु की बात स्वीकार की। इसे पूरा करने में उसे दो वर्ष लग गये। तभी उसे प्रोमोशन मिल सका।

निर्भयता की भांति निष्पक्षता भी उनका विशिष्ट गुण था।

बिरले ही होते हैं ऐसे निर्भीक, निष्पक्ष, निस्पृह और निरासक्त वात्सल्य के धनी। कमल-दल से कोमल परंतु कुलिश (बज्र) से भी कठोर। मेरा सौभाग्य कि ऐसे अनासक्त गुरुदेव के चरणों में बैठकर मुझे धर्म सीखने का अवसर मिला। उनके गुणों की याद में उन्हें शत-शत प्रणाम!

शुद्ध धर्म की शिक्षा

गुरुदेव की जिस एक बात ने मुझे उनकी ओर सर्वाधिक आकर्षित किया वह थी उनकी शुद्ध धर्म की सार्वजनीन व्याख्या। सचमुच बुद्ध ने शुद्ध धर्म ही सिखाया। सांप्रदायिकता के संकीर्ण दायरे से परे। और यही गुरुदेव की भी शिक्षण-विधि थी। इसे भिन्न-भिन्न संप्रदाय और समाज के लोग आसानी से धारण कर सकते हैं और लाभान्वित हो सकते हैं। मैंने गुरुजी में ऐसा कोई भी सांप्रदायिक भावावेश नहीं देखा, जिसके कारण कोई व्यक्ति अन्य संप्रदायवालों को अपने संप्रदाय में दीक्षित करने के लिए आतुर होता हो। वे किसी प्रकार की भी औपचारिक सांप्रदायिक दीक्षा को महत्त्व नहीं देते थे।

यह सच है कि वे परंपरागत बौद्ध थे और ऐसा होने का उन्हें गर्व था। पर उनके लिए बुद्ध की शिक्षा का सार शुद्ध सार्वजनीन धर्म था, सांप्रदायिकता नहीं। उनकी दृष्टि में बुद्ध का सच्चा अनुयायी वही है जो सद्धर्म धारण करता है। उनका लक्ष्य था लोगों को बुद्ध शासन में स्थापित करना। यानी धर्म में स्थापित करना। इसीलिए वे बार-बार समझाते थे कि बुद्ध-शासन क्या है –

सब्बपापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित्तपरियोदपनं, एतं बुद्धान सासनं॥

सभी अकुशल पाप कर्मों से विरत रहना। कुशल कर्मों में रत रहना। अपने चित्त को माजते रहना, निर्मल करते रहना- यही बुद्धों का शासन है, यानी, शिक्षा है। सभी बुद्धों की यही शिक्षा है।

शील, समाधि और प्रज्ञा। वे लोगों को इसी में स्थापित हो सकने में मदद करते थे ताकि लोग मैल से निर्मलता, दु:ख से दु:ख-विमुक्ति के सुखमय जीवन में परिवर्तित हो जायँ, दीक्षित हो जायँ। यूं निर्मलता में दीक्षित होकर कोई अपने को बौद्ध कहे तो सयाजी प्रसन्न होते थे। लेकिन केवल नाम बदल लेने से किसी को क्या मिलेगा भला? स्वभाव सुधार ले तो जीवन सुधर जाय। बस महत्त्व इसी बात को देते थे।

लोगों को संप्रदाय में दीक्षित करने के भावावेश में लगे हुए अनेकों को गुरुदेव खूब खरी-खरी सुनाते थे। कहते थे, ''औरों को बुद्धशासन में स्थापित करने का प्रयत्न करने के पहले स्वयं बुद्धशासन में स्थापित होना सीखो। स्वयं शील, समाधि, प्रज्ञा में स्थापित हुए बिना किसी दूसरे को शील, समाधि, प्रज्ञा में कैसे स्थापित कर पाओगे? और शील, समाधि, प्रज्ञा में स्थापित नहीं कर पाओगे तो बुद्धशासन में कैसे स्थापित कर पाओगे? केवल कोई निष्प्राण थोथी औपचारिकता पूरी करके उनका संप्रदाय बदलने से क्या मिलेगा?'' वे बड़े दबंग शब्दों में कहा करते थे– ''यदि तुम शील, समाधि, प्रज्ञा में स्थापित नहीं हो तो अपने आप को हजार बौद्ध कहते रहो, मेरे लिए तुम बौद्ध नहीं हो और जो शील, समाधि, प्रज्ञा में स्थापित है वह अपने आप को बौद्ध कहे या न कहे, मेरे लिए वह बौद्ध ही है। बुद्ध की शिक्षा का सच्चा अनुयायी है। यही सच्ची तातना प्यू है, यानी, किसी को शासन में स्थापित करना है।''

गुरुदेव के सांप्रदायिकता विहीन प्रशिक्षण का एक उदाहरण:

एक कट्टर ईसाई विपश्यना सीखने आया। प्रारंभिक औपचारिकताओं के सार को समझाते हुए जब गुरुजी ने तीन रत्न की शरण लेने के लिए कहा तो वह व्यक्ति बहुत घबराया। उसे लगा कि इस प्रकार उसे ईसाइयत से बौद्ध संप्रदाय में दीक्षित किया जा रहा है और इस निरर्थक भय से भीत होकर वह बुद्ध की शरण ग्रहण करने से मुकर गया। कहने लगा, ''शरण लेनी है तो ईसामसीह की लूंगा, बुद्ध की नहीं।''

''बहुत ठीक'' गुरुजी ने मुसकराते हुए कहा। ''ईसामसीह की ही शरण ग्रहण करो। पर इसी समझदारी के साथ कि तुम वस्तुत: ईसामसीह के गुणों की शरण ग्रहण कर रहे हो, ताकि वे गुण तुम में भी जागें। पर काम मैं जैसे बताऊं वैसे ही किये जाओ।'' उसने वैसे ही काम किया- शील, समाधि, प्रज्ञा का और शिविर समाप्त होते-होते वह अपने प्रारंभिक विरोध के लिए बहुत पछताया। वह जान गया कि संप्रदाय में दीक्षित होने का उसका भय नितांत निर्मूल था।

कल्याणमित्र,

सत्यनारायण गोयन्का

(—वर्ष 21, बुद्धवर्ष 2535, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, दि. 21-12-1991, अंक 6 से साभार)

मंगल मृत्यु

ताईवान की आदरणीया भिक्खुनी मिंग चिया सीह ने 21 जनवरी, 2024 को शांतिपूर्वक शरीर छोड़ा। सन 2000 से 2011 तक ताईवान की क्षेत्रीय आचार्या के रूप में सेवा की और फिर वहां पर दीर्घ शिविरों के लिए 'धम्म विकास' विपश्यना केंद्र स्थापित करने में भी पूरा योगदान दिया। उन्होंने अनेकों शिविरों का संचालन कर बहुत पुण्यपारमी अर्जित किया। धर्मपथ पर उत्तरोत्तर प्रगति करती हुई वे निर्वाणलाभी हों, यही मंगल कामना है।

oooooooooooooooooooo

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री शंकर राज शाक्य, धम्म जननी, नेपाल के केंद्र-आचार्य की सहायता
2. श्री केहर सिंह खड़क्का, धम्म जननी, नेपाल के केंद्र-आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्व
आचार्य

1. श्रीमती एस. जानकी, चेन्नई (पूर्व जिम्मेदारियों के साथ)
2. श्री रामनाथ शेनॉय, मुंबई
3. श्री आर. श्रीनिवासन, मदुराई, तामिलनाडु

नये उत्तरदायित्व
वरिष्ठ स. आचार्य

1. श्री संतोष जांभुळकर, नागपुर
2. श्री भानुमुरथी तम्मली, हैदराबाद
3. श्री मार्कण्डेयुलु वेलमुरी, हैदराबाद
4. श्री लक्ष्मैया बंडारी, सिंकन्दराबाद
5. श्रीमती वीणा बंडारी, सिंकन्दराबाद
6. श्री सिद्दम्म पोथुरु, सिंकन्दराबाद
7. श्री वल्लभनेनी ब्रह्मा वरा प्रसाद, एलुरू
8. श्री हृदय नारायण चौधरी, नेपाल
9. श्रीमती रेनू जाजोदिया, नेपाल
10. श्रीमती पुष्पा लाम्सल, नेपाल
11. श्रीमती सानु मैया के. सी. नेपाल
12. श्री प्रकाश बीर सिंह तुलाधर, नेपाल
13. श्री ज्ञान दर्शन ऊदास, नेपाल
14. श्री बिष्णु प्रसाद भंडारी, नेपाल
15. श्री बसंत कुमार थापा, नेपाल

नव नियुक्तियां
सहायक आचार्य

1. कु. सुरभी जैन, जयपुर
2. श्री खुशलसिंह परदेशी, औरंगाबाद
3. श्री शंकर प्रतापसिंह ठक्कर, मांडवी, कच्छ
4. श्रीमती नंदादेवी बोरसे, धुळे
5. श्रीमती मीना बोरसे, धुळे
6. कु. नलिनी गुप्ता, बैंगलोर
7. श्री जीवन पुथमाने श्रीनिवास, बैंगलोर
8. श्री अमरनाथ बी. एल., बैंगलोर
9. श्री संतोष धर्मराज, बैंगलोर
10. श्रीमती विमला ओक, बैंगलोर
11. श्री प्रकाश पाटस्कर, हैदराबाद
12. श्रीमती नागमणि शनिगरपु, हनमकोण्डा, तेलंगाना
13. श्री विद्यासागर अब्बुरी, हैदराबाद, तेलंगाना
14. श्री बीरेंद्र राज वागले, नेपाल
15. श्री काशी राम घिमिरे, नेपाल
16. कु. शोवा थकाली, नेपाल
17. Mr. Phu Tshering Bhutia, Sikkim
18. Miss. Arawee Tovijit, Thailand
19. Mrs. Duangsamorn Jansomboon, Thailand
20. Mrs. Hui Zhen Xie, China
21. Mrs. Yi Liu, Taiwan, China
22. Ms Cheng-Hoon Low, Malaysia.

बालशिविर शिक्षक

1. श्रीमती सोनाली कोसे, चंद्रपुर
2. श्री अमन नंदेश्वर, नागपुर
3. श्री चंद्रमणि बनसोड़, नागपुर
4. श्री जगदीश गजभिये, नागपुर
5. श्रीमती कविता चौहान, नागपुर
6. श्री परितोष डांगे, नागपुर
7. कु. सुजाता तमगाडगे, वर्धा
8. श्री आदित्य दुगड़, कोलकाता
9. कु. गीता कुमारी, हुगली
10. कु. श्यामश्री लाहिरी, कोलकाता
11. श्री विनोद रूके, पालघर
12. श्रीमती नेहा हरेशवाला, मुंबई
13. कु. रीता पाटिल, मुंबई
14. श्री अमरीश कदम, मुंबई
15. Mr. Mario Jayamaha, Sri Lanka,

कल्याणमित्र पूज्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी के जन्म-शताब्दी समारोह का सफल समापन

4 फरवरी, 2024, दिन रविवार को इस ऐतिहासिक समारोह का सफल समापन देख कर पूरे विश्व भर के साधकों एवं अन्य प्रशंसकों का मन प्रसन्नता से भर उठा। इस शुभ अवसर पर न केवल देश-विदेश के लगभग 7000 पुराने साधक-साधिकाओं ने ग्लोबल विपश्यना पगोडा में एक साथ बैठकर सामूहिक साधना की, बल्कि अनेक केंद्रों व अन्य स्थलों पर भी सीधा प्रसारण देखते-सुनते हुए पुराने साधक-साधिकाओं ने सामूहिक साधनाएं कीं। इसी बीच भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी का एक विडियो-संदेश भी आया जिसे अनेक भाषाओं में देखने की लिंक निम्न है—

https://www.youtube.com/live/XeTF9f9l8zw?si=f168DpzPBlKRCWBD

इस अवसर पर साधना संबंधी जो कार्यक्रम हुए उनमें से बहुत से प्रेरणाजनक उद्धरण पूज्य गुरुजी के प्रवचनों में से लेकर दिखाये व सुनाये गये। इनका विवरण (संग्रह) हम विपश्यना के अगले अंकों में छाया-चित्रों के साथ प्रकाशित करेंगे। फिलहाल नीचे के कुछ चित्रों में पगोडा के ऊपरी परिक्रमा-पथ, यानी, कैनोपी के ऊपर 4 फरवरी की पूर्व संध्यां पर 6-7 बजे की सामूहिक साधना करते हुए देश-विदेश के साधक-साधिकाएं और भिक्षुगण दिखाई दे रहे हैं :-

oooooooooooooooooooo

'धम्म सम्बोधि' नया दीर्घ शिविर विपश्यना केंद्र

बोधगया में दीर्घशिविर के लिए एक नये विपश्यना-केंद्र की योजना बनाई गई है। इसके अनुसार धम्मबोधि विपश्यना केंद्र के बगल 8 एकड़ भूमि पर इस केंद्र का निर्माण कार्य आरंभ होने जा रहा है, जिसका मास्टर प्लान बन गया है। इस केंद्र में 100 साधकों के लिए दीर्घशिविर की सुविधा उपलब्ध होगी।

'धम्म सम्बोधि' में 104 साधक-निवास, 120 शून्यगारों सहित पगोडा तथा ध्यान-कक्ष, पुरुष एवं महिला आचार्य निवास, भोजन- कक्ष, कार्यालय, स्टोर इत्यादि का निर्माण किया जायगा। इस परियोजना में लगभग 20 करोड़ रुपये लागत का अनुमान है।

इस महान धर्मकार्य में भागीदार होने का पुण्यावसर उपलब्ध है। साधक-साधिकाएं निम्न ईमेल और फोन पर सीधे संपर्क कर सकते हैं।

मंगल कामनाओं सहित,

'धम्म बोधि', बोधगया अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना ध्यान-केंद्र,
बोधगया, बिहार, भारत।
वेबसाइट: bodhi.vridhamma.org
ईमेल: accounts.bodhi@vridhamma.org
फोन: +91-9930796064

दोहे धर्म के

गहन निशा वन भटकते, हुआ विकल गुमराह।
सहज दिखाया धर्मपथ, गुरु ने पकड़ी बांह॥

धन्य भाग गुरुवर मिले, करुणा के भंडार।
अंधे को आंखें मिली, सत्य धर्म का सार॥

धरम नीर ऐसा मिला, धुला चित्त का चीर।
मिटी देखते-देखते, तन की, मन की पीर॥

मन मदमत्त गजेंद्र सा, जरा न वश में आय।
संत महावत सा मिला, अंकुश दिया लगाय॥

दूहा धरम रा

धन्य भाग गुरुवर मिल्यो, किसो क संत सुजान।
सुद्ध धरम ऐसो दियो, करण परम कल्याण॥

धन धन बिरमा देस मँह, संत मिल्यो अनमोळ।
भव-दुख प्यासै जीव नै, इमरत दीन्यो घोळ॥

मुरधर मुरधर भटकतां, रयो बिकल गुमराह।
गुरुवर सरवर सो मिल्यो, इमरत भर्यो अथाह॥

मिनख जमारो रतन सो, हो ज्यातो बरबाद।
जदि गुर नाय चखावतो, धरम सुधा रस स्वाद॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877, मोबा. 09423187301, *Email: morolium_jal@yahoo.co.in*
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2567, माघ पूर्णिमा, 24 फरवरी, 2024; वर्ष 53, अंक 9

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244998, 243553, 244076,
244086, 244144, 244440
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org